ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2017

REVIEW OF RESEARCH

मानव संसाधन – विकास

Dr. Surendra Ramlal Tiwari
Professor, Jyotiba College of Physical Education CRPF. Hingna Road , Nagpur.

सारांशः

मानव को अपने विकास के लिये संसाधनों का अभाव नहीं हैं, प्रकृति ने उसे सब कुछ दिया है जैसे खेत, खलिहान, पेड़–पौधे, फल–फूल, नदी, पहाड़, वर्षा, आंधी, तूफान, सर्दी, गर्मी, जीव–जन्तु, पशु–पक्षी, अथाह धातु भण्डार, ऊर्जा भण्डार, सूरज चांद आदि। इन सबका उपयोग एवं उपभोग करने वाला एक मात्र मानव ही तो है।

मानव संसाधन विकास एक संयुक्त प्रक्रिया है। जिसमें 1– मानव शक्ति (ऊर्जा) 2– संसाधन (कच्चामाल) 3– धन (उत्पादन एवं परिवर्तन) तीनो आवश्यक तत्व है। किसी एक की कमी विकास में बाधक होती है। मानव की शक्ति, प्राकृतिक संसाधन और धन, औजार है जिसके बल पर, व्यक्ति अपनी बुद्धि के बल पर संसाधनों में परिवर्तन कर आवश्यकताओं को पूरा करता है यही विकास है।

मूळ शब्दः मानव शक्ति, धन, औजार, सामाजिक व्यवस्था, समूह एवं समाज.

प्रस्तावनाः

मूल्य :

समाज में सामाजिक व्यवस्था व नियंत्रण बनाये रखने में मूल्यों की भूमिका का बड़ा महत्व है। मूल्य एक प्रकार का सामाजिक पैमाना है जिसके आधार पर हम किसी व्यक्ति के व्यवहार गुण, साधन लक्ष्य आदि में उचित, अनुचित अच्छा बुरा ठहराते हैं। यह किसी एक व्यक्ति की उपज न होकर समूह एवं समाज की उपज होती हैं।

समाजों में भिन्न–भिन्न प्रकार के मूल्य पाये जाते हैं। भारत में यौन पवित्रता का मूल्य पाया जाता है। यहां विवाह के पहले, बाद में पति पत्नी के अलावा यौन संबंधी छूट नहीं हैं। जबकि अनेक जनजातियों में यौन संबंधों की छूट होती हैं। इसी प्रकार ईमानदारी, सच बोलना, सहयोग व सेवा के सामाजिक मूल्य आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। आवश्यकता बदलने पर मूल्य भी परिवर्तित होते रहते हैं।

प्रत्यक्षीकरण :

प्रत्यक्षीकरण एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को किसी वस्तु उद्दीपक व अन्य व्यक्ति के संबंध में अर्थपूर्ण ज्ञान (Meaning ful knwoledge) प्राप्त होता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अपने सामाजिक प्रत्यक्षीकरण एवं निर्माण में समाज के प्रभाव से नहीं बच सकता है। समाज का जब कोई व्यक्ति अन्य किसी व्यक्ति के सम्पर्क में आता है तब वह सर्वप्रथम उस व्यक्ति के बोलने के ढंग, हाव–भाव, अंग संचालन आदि का प्रत्यक्षीकरण प्राथमिक रूप से करता है और इस संदर्भ में अपने निर्णय को

निश्चित करता है। प्रत्यक्षीकरण में छात्र एक–दूसरे के सम्पर्क में आने के फलस्वरूप वे एक दूसरे को प्रभावित करते हैं और प्रभावित होते है। सामाजिक प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया एन.सी.सी. कैडिट्स में तीव्रता से होती पाई गई है। क्योंकि एन.सी.सी. कैडिट्स विभिन्न कैम्पों में भिन्न–भिन्न प्रदेशों से आये हुये कैडिटों के साथ रहते हैं, वे एक दूसरे के बारे में जानकारी हासिल करकें अपने भविष्य के बारे में निर्णय लेते हैं।

सामाजिक प्रत्यक्षीकरण एवं निर्णय को प्रभावित करने वाले कारक – ◆ सामाजिक संरचना, ◆ प्रत्यक्षीकरण कर्ता की क्षमता, ◆ व्यक्तियों की विशेषतायें ◆ सूचनाओं की मात्रा एवं क्रम ◆ आवश्यकतायें, ◆ सामाजिक सहमति, ◆ मूल्य प्रणाली (Value System) ◆ बार–बार दुहराना (Repetition)

प्रेरणा (Motivation):

प्रेरणा व्यक्ति की वह अन्तर्निहित शक्ति है, जो व्यक्ति को क्रिया करने की प्रेरणा देती है। व्यवहार से ही प्रेरणा का अनुमान लगाया जा सकता है। प्रेरणा व्यक्ति के व्यवहार में उद्देश्य की दशा निर्धारित कर देती है।

प्रेरणा के प्रकार (Types of motivation) :

प्रेरणाओं को दो भागों में बांटा जा सकता है।

◆ जन्मजात प्रेरणायें : जैसे भूख, प्यास, यौन प्रेरक (Sex motive)

◆ अर्जित प्रेरणायें :

◆ समाजीकृत जैवकीय चालक – जैसे भूख एक जन्मजात प्रेरणा है लेकिन समाज भोजन के संबंध में नियम बनाते हैं। व्यक्ति उनका पालन करता है।

◆ सामान्य सामाजिक प्ररेणायें : यह अर्जित प्रेरणायें हैं व समाज से सीखी जाती हैं जैसे– ◆ जीवन लक्ष्य (Life Goal) ◆ आकांक्षा का स्तर (Level of aspiration) ◆ अभिरूचि और अभिवृत्ति (Interest and Attitude) ◆ आदत की शक्ति (Force of habit) (ड़) अचेतन प्रेरणा (Un conscious Motivation)

प्रेरणायें समाज से सीखी जाती हैं। प्रेरणायें भिन्न–भिन्न वर्गो में भिन्न होती हैं। यदि एक व्यक्ति सैनिक है तो उसकी प्रेरणायें कुछ होगों और एक व्यक्ति व्यवसायी है तो उसकी प्रेरणायें भिन्न होगी। एक मजदूर की प्रेरणायें इससे भी भिन्न होंगी।

व्यक्तित्व (Personality) :

व्यक्ति में जितनी विशेषतायें होती हैं उन सभी का संगठित रूप 'व्यक्तित्व' है अथवा व्यक्ति के जन्म जात एवं अर्जित गुणों का संगठन अथवा समन्वय ही व्यक्ति का व्यक्तित्व कहलाता है। व्यक्तित्व में मुखमुद्रा, चाल, ढाल, वेशभूषा, बातचीत का ढंग, व्यक्ति की बुद्धि, योग्यता, आदत, रूचियां, दृष्टिकोण, चरित्र इत्यादि शामिल होते हैं।

व्यक्ति का विकास (Personality Development) :

व्यक्तित्व की प्रक्रिया गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक सदैव चलती रहती है व्यक्तित्व के विकास के लिये मुख्यतः दो प्रमुख आधार है।

- **वंशानुक्रम (Heriditory)** : इसके अंतर्गत वे कारक आते हैं जो मुख्य रूप से व्यक्तित्व की शारीरिक रचनाओं तथा स्नायुतंत्र का निर्माण करते हैं।
- **पर्यावरणीय (Environmental)** : इसके अंतर्गत वे प्राकृतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक आते हैं जो व्यक्तित्व के सामाजिक सांस्कृतिक गुणों का विकास करते हैं।
- **आदत (Habit)** : आदत एक सीखा हुआ कार्य या अर्जित व्यवहार है, जो स्वतः होता है। आदतें अच्छी बुरी दोनों ही प्रकार की होती है। आदतों में सुधार/निर्माण करने हेतु कुछ नियम, उपाय या सिद्धांत है। इनको अपनाने से व्यक्तित्व का विकास होगा। मुख्य सिद्धांत निम्न है।

- **संकल्प (Resolution)** : जिस कार्य को करने की आदत डालना चाहतें हो उसके बारे में दृढ़ संकल्प करना चाहिये।
- **क्रियाशीलता (Activity)** : जिस कार्य का आप संकल्प करें, उसे पहले अवसर पर ही पूर्ण कीजिये।
- **निरंतरता (Continuity)** : जब तक नई आदत आपके जीवन में पूर्ण रूप से स्थाई न हो जाये तब तक उसमें व्यवधान नहीं होने देना चाहिये।
- **अभ्यास (Exercise)** : प्रतिदिन थोड़े से एच्छिक अभ्यास के द्वारा कार्य करने की शक्ति को जीवित रखिये।
- **अच्छे उदाहरण (Good Example)** : अच्छी आदतों के निर्माण में अच्छे उदाहरण सहायक हैं। महानपुरूषों के जीवन चरित्र को पढ़ना चाहिये।
- **पुरस्कार (Reward)** : अच्छी आदतों के निर्माण करने के लिये कैडिट को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित करना चाहिये।

निर्णय लेना (Decesion Making):

हम सभी को जीवन में निर्णय लेने होते है। इन्हीं पर हमारी सफलता/विफलता निर्भर करती है। एक सैनिक का निर्णय से तात्पर्य विभिन्न संभव तरीकों की समीक्षा व समालोचना से है। लड़ाई में सफलता बहुत कुछ कमांडर के निर्णय पर निर्भर करती है। किसी परिस्थिति पर निर्णय लेते समय निम्नक्रम अपनाना चाहिये।

- ✈ उद्देश्य (Object)
- ✈ कारक (Factors)
- ✈ रास्ते (Courses Open)
- ✈ योजना (Plan of Action)

संदर्भ ग्रंथ :

1. **हैन्ड बुक ऑफ एन सी सी**, कान्ती प्रकाशन, इटावा, उत्तर प्रदेश (2007) पृ. 227–238.
2. आफर, **हाईस्कूल विद्यार्थीयो की शारीरिक शिक्षा** (वाशिंग्टन, आफर पब्लिकेशन, द्वितीय संस्कार, 1970).
3. मार्क्स, कार्ल फ्रे एंगेल्स, **दर्शन क्या है,** (संकलित रचनाऐं तीन खण्डों में खण्ड 1, भाग 2, मास्को प्रगति प्रकाशन, 1978).
4. नामिको, आईकोवा तथा टोकियो जपान के बच्चो की शारीरिक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन **रिसर्च क्वार्टर्ली,** 33 (1963) 4
5. पूनम दिक्षीत, "इन्टर रिलेशनशीप ऑफ रिऍक्शन टाईम, स्पीड ऑफ मुवमेंट एण्ड एजिलीटी एण्ड देयर कम्पेरिजन अमंग दी प्लेयर्स फ्रॉम सिलेक्टेड स्पोर्टस" (अनपब्लिशड् मास्टर थिसीस, जीवाजी युनिवर्सीटी, ग्वालियर, 1982).

Dr. Surendra Ramlal Tiwari
Professor, Jyotiba College of Physical Education CRPF. Hingna Road , Nagpur.